Study material For B.A Part II (Hons) Paper. 3rd Th

Dr Tapali Mukerji.
Topic Granth Sangeet Parijat
Date 20-05-2020
Associate Professor (Music)
R.M.College Sarr.

संगीत पारिजात नामक ग्रन्थ की रचना सं० 1650 ई० मे पंडित अहोबल ने किये थे। पंडित अहोबल संगीत के मूर्धन्य विद्वान थे। यह ग्रन्थ अपने समय का प्रतिनिधि ग्रन्थ के रूप मे माना जाता है

संगीत के इतिहास मे अहोबल ही प्रथम व्यक्ति थे जिन्होने संगीत पारिजात मे वीणा पर स्वर स्थान निश्चित करने के लिए एक नवीन पद्धति को अपनाये। इस पद्धति के माध्यम से एक साधारण व्यक्ति भी स्वरों की स्थापना सही रूप से कर सकते है।

मंगलाचरण से इस ग्रन्थ का शुरुआत है, ततपश्चात स्वर, ग्राम, मूर्च्छना, स्वर-विस्तार, वर्ण जाति समय और राग प्रकरणों में संगीत के पारिभाषिक शब्दो तथा संगीत के अन्य तत्वों पर विस्तारित विचार किया गया है।

स्वर प्रकरण के अन्तर्गत, हृदय स्थित अनाहत चक्र मे वायु और अग्नि के मिलन से आहत नाद उत्पन्न होता है। नाद दो प्रकार के होते है, आहत तथा अनाहत, स्वर और श्रुति मे सर्प और उसके कुण्डली सा भेद है। श्रुतियों की लक्षण तथा उनके नामों को भी वर्णन किये। बाईस श्रुतियों को पाँच भागों मे विभक्त किये। — दीप्ता, आयता, करुणा, मृदु और मध्यमा।

सामग को ब्राह्मण, ऋक को क्षत्रिय, गन्धर्व को वैश्य कहा, ततपश्चात स्वरों की उत्पत्ति उसके रंग और रसों का वर्णन किये, ग्राम प्रकरण मे षड्ज, मध्यम और गान्धार तीनो ग्रामों को स्वरूप का वर्णन किये।

मूर्च्छना के अन्तर्गत उसकी परिभाषा देते हुए षड्ज ग्राम की मूर्च्छनाओं का वर्णन किये, उनके अनुसार शुद्ध स्वरों से सात मूर्च्छना हो सकती और लेकिन(?) उन्होंने विकृत स्वरों से भी सम्पूर्ण जाति की मूर्च्छना का सूचना किये।

स्वर प्रस्तार प्रकरण के अन्तर्गत सातो स्वर के मिलने से चार हजार तीन सौ बीस स्वर समूह की रचना का वर्णन किये। वर्ण लक्षण मे वर्ण की परिभाषा देते हुए वर्ण की ~~[illegible]~~ चार प्रकार बताये - स्थाई, अन्तरा या आरोही संचारी एवं आभोग या अवरोही, अलंकार की परिभाषा मे कहे है - "क्रमेण स्वरसंदर्भमलंकार प्रचक्षते।" अलंकारों का भी कई प्रकार वर्णन किये है। स्थायि वर्ण मे सात(7) आरोही ~~[illegible]~~ वर्ण मे 12 संचारी वर्ण मे 25 तथा अवरोही वर्ण मे 12 और 56 अलंकारों वर्णन किये, उन्होंने मन्द्र सप्तक के लिए ऊपर बिन्दु तथा उसमें स्वरों के लिए या तार के लिए ऊपर खड़ी रेखा की चिन्ह बताये है।

गमक प्रकरण के माध्यम मे 7(सात) शुद्ध जातियाँ षड्जा, ऋषभी, गांधारी, मध्यमा पंचमी धैवती तथा निषादी स्वरों का अल्प परिचय देते हुए कंपित, प्रलोहित(?), स्फुरित, घर्षण(?), तिरिप, हुम्फित आदि गमकों का ~~[illegible]~~ विस्तृत वर्णन किये।

समय प्रकरण के अन्तर्गत वीणा पर स्वरों की स्थापना, पाँच प्रकार की गीतियाँ तथा उनके लक्षण का वर्णन किये, पुनः एक सौ पैंतिस(?) रागों का परिचय तथा उनका गायन समय का वर्णन किये,

---

~~तीनों~~ तीनों ग्राम का -